उत्तर:

कई लोग मानते हैं कि यीशु की माता मरियम स्वर्ग की रानी हैं। लेकिन जब हम बाइबल को ध्यान से देखते हैं, तो पता चलता है कि “स्वर्ग की रानी” शब्द बाइबल में ज़रूर आता है—लेकिन यह कभी सकारात्मक संदर्भ में नहीं है, और निश्चित रूप से मरियम के लिए नहीं। यह एक मूर्तिपूजक देवी के लिए इस्तेमाल होता था, जिसे इज़रायल के लोग गलत तरीके से पूजते थे, और जिसे परमेश्वर ने कड़ाई से मना किया।

1. “स्वर्ग की रानी” केवल मूर्तिपूजा की निंदा में आती है

यिर्मयाह 7:18–20 (ERV)
“बच्चे लकड़ी इकठ्ठा करते हैं, पिता आग जलाते हैं, और स्त्रियाँ आटा गूंधकर रोटियाँ बनाती हैं ताकि उन्हें
स्वर्ग की रानी को चढ़ा सकें। वे अन्य देवताओं को पीने की होमशाला चढ़ाते हैं ताकि मेरा क्रोध भड़क सके। परन्तु क्या मैं ही वह हूँ जिसे वे उत्तेजित कर रहे हैं?” प्रभु कहता है। “वे अपनी ही शानि के लिए हानि नहीं पहुँचा रहे हैं? इसलिए प्रभु परमेश्वर कहता है: मेरा क्रोध और मेरी वेदना इस स्थान पर प्रकट होगी।”

इस पद में पूरा परिवार मूर्तिपूजा में शामिल है, और यह स्वर्ग की रानी—एक झूठी देवी—को सम्मान देने के लिए है। परमेश्वर स्पष्ट रूप से कहते हैं कि यह क्रोध का कारण बनता है और विनाश लाता है।

यिर्मयाह 44:17–23 (ERV)
“हम निश्चित रूप से वही करेंगे जो हमने कहा था: हम स्वर्ग की रानी को धूप देंगे और उसे पीने की होमशाला चढ़ाएँगे…
जब से हमने स्वर्ग की रानी को धूप देना बंद किया… हमें कुछ
भी नहीं मिला और हम तलवार और अकाल से नष्ट हो रहे हैं।”
“जब प्रभु तुम्हारे दुष्ट कर्मों को और सहन नहीं कर सकते
थे… तुम्हारी भूमि शापित हो गई… क्योंकि तुमने धूप दी और प्रभु के विरुद्ध पाप किया।”

यह दिखाता है कि लोग जिद्दी होकर अपनी मूर्तिपूजा का बचाव करते हैं, लेकिन उनका दुख रानी को न मानने के कारण नहीं था—बल्कि यह परमेश्वर के आदेशों का उल्लंघन था।

2. मरियम को सम्मान मिला, लेकिन उन्हें पूजा नहीं किया गया

मरियम एक धार्मिक और परमेश्वर की कृपा से भरी महिला थीं। उन्हें सम्मान देना चाहिए, लेकिन बाइबल कभी नहीं कहती कि

उन्हें पूजा जाए, प्रार्थना की जाए या उन्हें “स्वर्ग की रानी” कहा जाए।

लूका 1:28 (ERV)
“स्वागत है, कृपा प्राप्त, प्रभु तुम्हारे साथ है;
स्त्रियों में तू धन्य है।”

मरियम स्त्रियों में धन्य थीं, लेकिन उन्होंने स्वयं परमेश्वर को अपना उद्धारकर्ता माना:

लूका 1:46–47 (ERV)
“मेरा आत्मा प्रभु को महिमा देता है, और मेरी आत्मा मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनन्दित है।”

यदि मरियम को उद्धारकर्ता की आवश्यकता थी, तो वह भी हम जैसे मनुष्य थीं, जिन्हें उद्धार की जरूरत थी, न कि पूजा जाने वाली देवी या रानी।

3. पूजा केवल परमेश्वर को ही मिलती है; यीशु ही मध्यस्थ हैं

बाइबल सिखाती है कि केवल परमेश्वर ही पूजनीय हैं और यीशु मसीह ही हमारे एकमात्र मध्यस्थ और राजा हैं।

1 तीमुथियुस 2:5 (ERV)
“क्योंकि एक ही परमेश्वर है और मनुष्य और परमेश्वर के बीच
एक ही मध्यस्थ है—मनुष्य मसीह यीशु।”

कहीं भी शास्त्र में यह नहीं लिखा कि मरियम सह-मध्यस्थ हैं या किसी तरह आध्यात्मिक मध्यस्थ हैं। ऐसा विश्वास बाइबल के विरुद्ध है।

मत्ती 4:10 (ERV)
“अपने परमेश्वर की ही पूजा करो और केवल उसी की सेवा करो।”

4. “मरियम, स्वर्ग की रानी” का विचार कहाँ से आया?

स्वर्ग की रानी का विचार ईसाई धर्म से पहले भी मौजूद था।

प्राचीन मूर्तिपूजक धर्मों में देवी-देवताओं जैसे अष्टारेथ, सेमिरामिस, और आर्टेमिस को माता देवी माना जाता था और उन्हें अक्सर स्वर्ग की रानी कहा जाता था।

1 राजा 11:5 (ERV)
“सुलैमान ने सिदोनियों की देवी अष्टारेथ का अनुसरण किया।”

बाद में परंपरा-आधारित ईसाई धर्म में, कुछ मूर्तिपूजक प्रथाओं को धार्मिक रीतियों में शामिल कर लिया गया, खासकर रोमन कैथोलिक चर्च में। समय के साथ, मरियम को गलत तरीके से “स्वर्ग की रानी” के रूप में पूजा जाने लगा—जो बाइबल के शिक्षाओं का सीधा विरोध है।

5. स्वर्ग का असली राजा कौन है?

बाइबल स्पष्ट रूप से बताती है कि स्वर्ग का राजा केवल यीशु मसीह हैं:

प्रकटीकरण 19:16 (ERV)
“उसकी पोशाक और जंघा पर लिखा है: राजाओं का राजा और प्रभुओं

का प्रभु।”

वे अकेले ही स्वर्ग के सिंहासन पर बैठे हैं; उनके साथ कोई रानी नहीं है।

निष्कर्ष

“स्वर्ग की रानी” बाइबल में एक झूठी, मूर्तिपूजक देवी के लिए है—मरियम के लिए नहीं।
बाइबल हमें कभी नहीं कहती कि मरियम की पूजा करें या प्रार्थना करें।
यीशु मसीह ही स्वर्ग के राजा, उद्धारकर्ता और परमेश्वर और मानव के बीच एकमात्र मध्यस्थ हैं।
हमें केवल परमेश्वर की पूजा करनी है, न कि प्राचीन मूर्तिपूजा पर आधारित परंपराओं का पालन करना है।

मरियम को उनके विश्वास और आज्ञाकारिता के लिए सम्मान दें, लेकिन पूजा केवल परमेश्वर को ही दें।

यशायाह 42:8 (ERV)
“मैं ही प्रभु हूँ; यही मेरा नाम है; और मेरी महिमा मैं किसी और को नहीं दूँगा, न ही मेरी स्तुति मूर्तियों को।”

ईसाई होने के नाते, बाइबल की शिक्षा के प्रति वफादार रहें। हर विश्वास और प्रथा की परीक्षा परमेश्वर के वचन से करें—परंपरा या भावना से नहीं। यीशु मसीह को अपने विश्वास और उद्धार का केंद्र बनाएं।

धन्य रहें और सत्य में दृढ़ रहें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp